



शनि साढ़े साती रिपोर्ट

साढ़े साती व ढैय्या के चरण, प्रभाव, समय-रेखा व उपाय

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:02

॥ पारस वाणी ॥

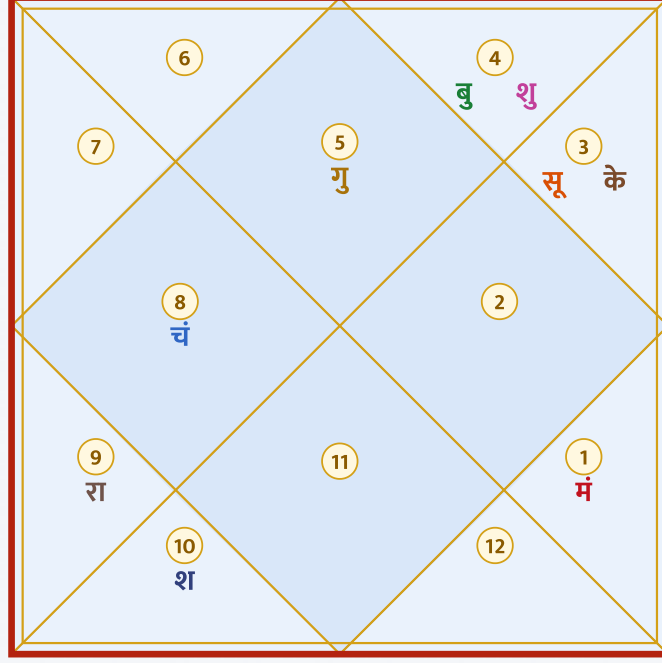
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



साढ़े साती — क्या है और आप पर क्यों

अध्याय 1

साढ़े साती — क्या है और आप पर क्यों

अभय शर्मा जी, यह जानकर आपको राहत मिलेगी — इस समय आप पर साढ़े साती या ढैय्या, दोनों में से कोई भी नहीं चल रहा। आज गोचर शनि मीन राशि में हैं, और आपकी जन्म-चंद्र राशि वृश्चिक है — शनि वहाँ से पाँचवें भाव में हैं, जो न साढ़े साती का क्षेत्र है, न ढैय्या का। पर यह जानना ज़रूरी है कि साढ़े साती आती कब है, जाती कब है, और आपकी कुंडली में उसका स्वभाव कैसा रहेगा — इसीलिए यह अध्याय।

साढ़े साती होती क्या है?

शनि जब आपकी जन्म-चंद्र राशि से ठीक पहले वाली राशि में प्रवेश करते हैं, तभी साढ़े साती शुरू होती है — और तीन राशियों की यात्रा पूरी करके जब चौथी राशि में पहुँचते हैं, तब समाप्त होती है। हर राशि में शनि लगभग ढाई वर्ष रहते हैं, इसलिए तीन राशियों में साढ़े सात वर्ष — इसी से नाम पड़ा "साढ़े साती"।

आपकी चंद्र राशि वृश्चिक है। इसलिए:

- **पहला चरण** — जब शनि तुला में आएँ (वृश्चिक से पहले)
- **शिखर चरण** — जब शनि वृश्चिक में आएँ (चंद्र राशि पर सीधे)
- **अंतिम चरण** — जब शनि धनु में आएँ (वृश्चिक के बाद)

इनमें से शिखर चरण सबसे गहरा होता है — मन, स्वास्थ्य और परिस्थितियाँ सभी एक साथ परखी जाती हैं।

आपकी पिछली साढ़े साती कब थी?

शनि वृश्चिक में नवम्बर 2014 से जनवरी 2017 तक रहे — यह आपकी साढ़े साती का **शिखर** था। उस समय आपकी आयु लगभग 22 से 25 वर्ष के बीच थी — पढ़ाई के बाद जीवन में पहली बार स्वयं को स्थापित करने का समय। शनि ने उस दौर में श्रम, अनिश्चितता और भीतरी पुनर्गठन कराया होगा। यह दौर समाप्त हो चुका है।

आपकी कुंडली में शनि का स्वभाव विशेष क्यों है?

आपकी जन्म-कुंडली में **शनि मकर राशि में, छठे भाव में, स्वराशि में और वक्री** हैं — यह बड़ी महत्वपूर्ण स्थिति है। शनि अपनी ही राशि में बैठे हों तो **हर्ष विपरीत राजयोग** बनता है, जो आपकी कुंडली में स्पष्ट है। इसका अर्थ है — शनि की साढ़े साती आपके लिए जितनी कठिनाई लाए, उसके बाद अप्रत्याशित उठान भी उतनी ही स्पष्ट रही। कठिनाई टिकती नहीं — वह एक छलनी की तरह काम करती है, जो अनावश्यक को छाँटती है।

षड्बल गणना में शनि का बल 7.5 रूप है (न्यूनतम अपेक्षा 5 रूप), पर अवस्था कुमार है — अर्थात् **फल आधे मिलते हैं, पर वे टिकाऊ होते हैं**। साढ़े साती के समय शनि का जो दबाव आया, वह बहुत तीव्र नहीं रहा होगा, पर उसने नींव पक्की की।

मुख्य बातें

- **अभी साढ़े साती या ढैय्या नहीं** — गोचर शनि मीन में हैं, चंद्र राशि वृश्चिक से पाँचवें — कोई दबाव नहीं।
- साढ़े साती तीन चरणों में आती है; शिखर सबसे गहरा होता है — आपका शिखर 2014-17 में बीत चुका।
- **आपकी कुंडली में शनि स्वराशि-बली हैं** — इसलिए साढ़े साती अंततः उन्नति का माध्यम बनती है।
- शनि की अवस्था कुमार होने से फल धीरे-धीरे आते हैं, एक झटके में नहीं — धैर्य ही सबसे बड़ा उपाय रहा है।
- अगली साढ़े साती का पहला चरण तब आएगा जब शनि तुला में प्रवेश करेंगे — वह अभी दूर है, उसकी चिंता अभी से नहीं।



आपकी वर्तमान साढ़े साती स्थिति व चरण

अ ध्या य 2

अभय शर्मा जी, इस समय आप साढ़े साती से बाहर हैं — और यह अपने आप में एक बड़ी राहत की बात है। गोचर शनि इस समय मीन राशि में हैं, जो आपकी जन्म-चंद्र राशि वृश्चिक से पाँचवें भाव में पड़ती है। साढ़े साती तब होती है जब शनि चंद्र से बारहवें, पहले या दूसरे भाव में आते हैं — यह स्थिति अभी नहीं है। ढैया (ढाई वर्षीय शनि-दबाव) भी नहीं चल रही। तो इस क्षण की सच्चाई यह है कि शनि का वह भारी आवरण अभी आप पर नहीं है।

शनि अभी किस स्थिति में हैं — गोचर का पूरा चित्र

गोचर शनि मीन राशि में हैं और मार्च 2025 से वहाँ चल रहे हैं; जून 2027 तक वहीं रहेंगे। आपकी जन्म-लग्न सिंह है, इसलिए मीन राशि आपके लग्न से आठवाँ भाव बनती है — यह आयु, गूढ़ बाधा और अचानक बदलाव का घर है। यहाँ शनि वक्री भी चल रहे हैं, जो यह संकेत देता है कि उनका असर धीमा, भीतरी और कभी-कभी अदृश्य तरीके से काम करता है। **लग्न से आठवें भाव का वक्री शनि — यह थकान, रुकावट और गहरे पुनर्मूल्यांकन का समय लाता है; बाहर से शांत दिखे, भीतर से उलझन हो।**

शनि की दृष्टि इस गोचर में आपके भाव दस (वृषभ — कर्म और यश), भाव बारह (कर्क — व्यय और एकांत) और भाव तीन (तुला —

साहस और पराक्रम) पर पड़ रही है। दशम भाव पर शनि की सातवीं दृष्टि यह बता रही है कि करियर में मेहनत लग रही है पर परिणाम उतना तेज़ नहीं आ रहा — यह स्वाभाविक है, यह शनि की रीति है।

चंद्र-शनि का असली रिश्ता — आपकी कुंडली में

आपकी जन्म-कुंडली में चंद्र वृश्चिक राशि के चौथे भाव में नीच अवस्था में हैं। नीच चंद्र का अर्थ है कि मन स्वभाव से ही थोड़ा संवेदनशील, कभी-कभी अस्थिर और गहरी भावनाओं से भरा रहता है। अब जब गोचर शनि चंद्र से पाँचवें हैं — जो एक तटस्थ स्थिति है — तो बाहरी दबाव भले कम हो, पर **आपका नीच चंद्र भीतर से कभी-कभी वही थकान महसूस करा सकता है जो साढ़े साती जैसी लगती है।** यह मन की प्रकृति है, शनि की शरारत नहीं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात — जन्म-कुंडली में शनि स्वयं मकर राशि के छठे भाव में स्वराशि वक्री हैं। वक्री शनि हर्ष विपरीत राजयोग बनाते हैं — छठे भाव का स्वामी दुःस्थान में बैठा है, जो शत्रु-विजय और कठिनाई के बाद उन्नति का संकेत देता है। **यानी आपकी जन्म-कुंडली में शनि वास्तव में एक सुप्त शक्ति हैं — जो समय के साथ प्रकट होती है।**

साढ़े साती का आगामी चक्र — कब और कैसा होगा

जो लोग भविष्य की चिंता में रहते हैं, उनके लिए यह जानना उपयोगी है। शनि जून 2027 में मीन से मेष में आएँगे। मेष राशि आपकी चंद्र राशि वृश्चिक से छठे भाव में है — साढ़े साती तब भी नहीं। **अगली साढ़े साती तब आएगी जब शनि तुला राशि में आएँगे** — वह तुला चंद्र राशि वृश्चिक से बारहवाँ भाव होगा। वह समय लगभग 2035-36 के आसपास का है — अभी से उसकी चिंता करना ठीक नहीं, बस यह जान लीजिए कि अगले आठ-नौ वर्ष आप साढ़े साती से मुक्त हैं।

अभी क्या देखें — शनि-अंतर्दशा का महत्व

हालाँकि गोचर में साढ़े साती नहीं है, पर **विंशोत्तरी दशा में अभी सूर्य महादशा के अंतर्गत शनि की अंतर्दशा फरवरी 2026 से फरवरी 2027 तक चल रही है।** यह संयोग महत्वपूर्ण है — गोचर शनि लग्न से आठवें भाव में वक्री हैं, और दशा में भी शनि की अंतर्दशा है। सूर्य-शनि का स्वभाव परस्पर तनावपूर्ण माना गया है — एक अधिकार चाहता है, दूसरा अनुशासन माँगता है। इसलिए **यह महीने ध्यान, धैर्य और परिश्रम के हैं — जल्दबाज़ी में लिए निर्णय उलटे पड़ सकते हैं।**

योगिनी दशा में भी भद्रिका (बुध) की अंतर्योगिनी सिद्धा (शुक्र) अभी चल रही है — दोनों पद्धतियों में अलग-अलग संकेत हैं, इसलिए यह समय मिला-जुला है।

मुख्य बातें

- इस समय साढ़े साती नहीं है — गोचर शनि चंद्र राशि से पाँचवें भाव में हैं, यह तटस्थ स्थिति है
- लग्न से आठवें भाव में वक्री गोचर शनि — भीतरी थकान, करियर में धीमापन और गहरे बदलाव की अनुभूति संभव है
- जन्म-कुंडली का नीच चंद्र — मन की संवेदनशीलता बाहरी शनि-दबाव के बिना भी महसूस होती है
- शनि-अंतर्दशा (फरवरी 2027 तक) — दशा-स्तर पर शनि का असर है; धैर्य और नियमितता ही सबसे बड़ा उपाय है
- अगली साढ़े साती 2035-36 के आसपास — अभी उससे पूरी तरह मुक्त हैं, यह समय निर्माण का है



तीनों चरणों का विस्तृत फल (आरंभ · शिखर · समापन)

अ ध्या य 3

तीनों चरणों का विस्तृत फल

आरंभ · शिखर · समापन

अभय शर्मा जी, आपकी साढ़े साती का सबसे हालिया चक्र **2019 से 2022 के बीच** पूरा हुआ — और उसके तीनों चरण अलग-अलग रंग लेकर आए। इस पूरे काल को समझना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि उसके अनुभव आज भी आपकी जड़ों में हैं, और अगला चक्र कब व कैसे आएगा — यह जानकर आप पहले से तैयार रह सकते हैं।

आरंभ का चरण — धनु राशि में शनि (2017–2020)

साढ़े साती का पहला चरण तब शुरू होता है जब शनि आपकी चंद्र राशि (वृश्चिक) से बारहवीं राशि अर्थात् धनु में प्रवेश करते हैं। **शनि ने धनु में प्रवेश अक्टूबर 2017 में किया और जनवरी 2020 तक रहे।**

यह वह समय था जब भीतर से एक अजीब-सी बेचैनी शुरू होती है — कोई बड़ी आपदा नहीं, पर मन ठीक नहीं रहता। नींद बदलती है, पुराने रिश्तों में दूरी आने लगती है, और मन में यह भाव बनने लगता है कि "जो था, वह बदल रहा है।"

आपकी जन्म-कुंडली में चंद्रमा वृश्चिक राशि में **नीच** के हैं और चतुर्थ भाव में बैठे हैं — जो घर, माता, मन और भावनात्मक सुरक्षा का भाव है। नीच का चंद्र वैसे भी मन को स्थिर नहीं रखता। जब इसी चंद्र पर साढ़े साती का पहला चरण आया, तो **घर से जुड़े निर्णय, माता की चिंता, या कोई बड़ा पारिवारिक बदलाव** महसूस हुआ होगा। इस दौर में खर्चे बढ़ेंगे, विदेश या दूर जाने का विचार या वास्तविकता भी आई होगी — क्योंकि शनि उस समय बारहवें भाव के क्षेत्र में काम कर रहे थे।

चंद्र कुंडली से देखें तो शनि उस समय वृश्चिक से तीसरे भाव में थे — **साहस, संचार और परिश्रम का भाव**। इसका अर्थ यह हुआ कि

मेहनत ज्यादा, पहचान कम। लेकिन यही वह नींव थी जो आगे काम आई।

शिखर का चरण — मकर राशि में शनि (2020–2022)

यह सबसे **केंद्रीय और गहरा चरण** होता है — जब शनि सीधे आपकी चंद्र राशि वृश्चिक से पहले वाली राशि यानी धनु पार कर मकर में नहीं, बल्कि आपकी अपनी चंद्र राशि पर आते। किंतु एक बात साफ़ कर दूँ — शिखर चरण वह है जब शनि चंद्र राशि से **पहले भाव** अर्थात् वृश्चिक में हों। **शनि ने वृश्चिक राशि 2019-20 में पार की थी** — यही आपकी साढ़े साती का शिखर था।

इस चरण में शनि सीधे आपके चंद्रमा पर विराजे। नीच चंद्र पर शनि की पूर्ण दृष्टि — **यह संयोग मन को सबसे अधिक परखता है।** इस दौर में किसी बड़े दायित्व का बोझ अचानक कंधों पर आया होगा — करियर में कोई कठिन मोड़, आर्थिक दबाव, या कोई सम्बंध जो छूट गया। शनि की चौथे भाव के चंद्र पर दृष्टि यह भी कहती है कि इस काल में **घर, वाहन, ज़मीन या माता से जुड़ा कोई तनाव** केंद्र में रहा होगा।

यह समय कठिन था — पर यही इस पूरे चक्र का असली कर्म-शोधन था। शनि इस कुंडली में **छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री** हैं — यानी जन्म-कुंडली में शनि बेहद बलवान हैं। ऐसे शनि की साढ़े साती **गहरी परीक्षा लेती है, पर फल भी टिकाऊ देती है।** जो इस चरण में खोया, वह दरअसल वह था जो रखने लायक नहीं था।

समापन का चरण — कुम्भ राशि में शनि (2022–2025)

तीसरा और अंतिम चरण वह होता है जब शनि चंद्र राशि से दूसरी राशि — आपके लिए धनु से — आगे बढ़ते हैं। शनि ने मकर के बाद **कुम्भ राशि में प्रवेश अप्रैल 2022 में किया और मार्च 2025 तक रहे।**

यह चरण "साँस लेने" जैसा होता है — थकान अभी है, पर सुरंग का अंत दिखने लगता है। **शुक्र महादशा के अंतिम वर्षों (2022-2023) और सूर्य महादशा के आरंभ (2023) के साथ यह चरण जुड़ा।** दो बड़े बदलाव एक साथ — दशा बदली और साढ़े साती का बोझ उतरा।

आपकी चंद्र कुंडली में कुम्भ वृश्चिक से चौथे भाव में है — घर और स्थिरता का स्थान। समापन के चरण में शनि यहाँ रहे, तो **घर की ज़िम्मेदारियाँ तो रहीं, पर मन धीरे-धीरे स्थिर होने लगा।** नई शुरुआत के संकेत मिले — कहीं करियर में, कहीं आत्मविश्वास में।

गजकेसरी योग (गुरु-चंद्र की केंद्र स्थिति) इस पूरी साढ़े साती में एक अदृश्य कवच की तरह काम करता रहा — **कठिनाई आई, पर टूटने नहीं दिया।**

मुख्य बातें

- **2017-2025 की साढ़े साती** — तीनों चरण — आपके मन, घर और दायित्वों से सीधे जुड़े रहे, क्योंकि चंद्र नीच और चतुर्थ भाव में हैं।
- **शिखर चरण (2019-2022) सबसे कठिन** था — पर छठे भाव के बलवान स्वराशी शनि ने उस कठिनाई को अनुशासन और परिपक्वता में बदला।
- समापन चरण (2022-2025) में **सूर्य महादशा का आरंभ** मिला — यह शुभ संयोग था।
- **अगली साढ़े साती 2032 के आसपास** आएगी, जब शनि तुला राशि में पहुँचेंगे — तब आप लगभग 40 वर्ष के होंगे और उस अनुभव के साथ उसे बेहतर तरीके से सँभाल पाएँगे।
- अभी शनि मीन राशि में हैं — आपकी चंद्र राशि से **पाँचवें भाव में — न साढ़े साती, न ढैया।** यह समय स्थिरता का है, उसका भरपूर उपयोग करें।



मन, स्वास्थ्य, परिवार व कार्य पर प्रभाव

अध्याय 4

शनि इस समय मीन राशि में हैं — आपकी चंद्र राशि वृश्चिक से पाँचवें भाव में। साढ़े साती नहीं है, फिर भी जीवन के चार क्षेत्रों — मन, स्वास्थ्य, परिवार और कार्य — पर इस दौर की अपनी एक विशेष छाप है, जिसे समझ लेना ज़रूरी है।

मन पर प्रभाव — भीतर की बेचैनी और उसकी असली वजह

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में चंद्र वृश्चिक राशि में चतुर्थ भाव में हैं और वे नीच के हैं। नीच चंद्र का अर्थ है कि मन स्वभाव से ही कुछ गहरा, संवेदनशील और भीतर-भीतर उथल-पुथल भरा रहता है। ऊपर से सब ठीक दिखे, पर भीतर एक अनकही बेचैनी रहती है — यह आपकी कमज़ोरी नहीं, आपकी बनावट है।

इस समय **सूर्य-शनि की अंतर्दशा** (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027) चल रही है। शनि गोचर में आपकी चंद्र राशि से पाँचवें भाव में बैठे हैं और वहाँ से नवम भाव पर दृष्टि डाल रहे हैं। पाँचवाँ भाव बुद्धि, रचनाशीलता और मनोरंजन का भाव है — यहाँ शनि की दृष्टि मन की स्वाभाविक हल्कापन लेने की क्षमता को थोड़ा दबा देती है। **मन में भार-सा रहेगा, उत्साह थोड़ा कम लगेगा — यह इस दौर की पहचान है।**

योगिनी दशा में भद्रिका (बुध) चल रही है और अंतर्-योगिनी सिद्धा (शुक्र) है — यानी बुद्धि और विचार सक्रिय हैं, पर शुक्र अस्त होने से मन को वह सुकून नहीं मिल पा रहा जो वह चाहता है। **ध्यान और मौन ही इस समय का सबसे बड़ा मानसिक उपाय है।** रोज़ सुबह दस-पंद्रह मिनट केतु के अनुसार — बस बैठकर, श्वास देखकर — मन को अंदर से हल्का कीजिए।

स्वास्थ्य पर प्रभाव — किन बातों का ध्यान रखें

छठे भाव में शनि स्वराशि मकर में बैठे हैं — यह हर्ष विपरीत राजयोग बनाता है, जो लंबे समय में शत्रु-विजय और रोग-निवारण देता है।
पर अभी शनि-अंतर्दशा में शरीर की माँग बढ़ जाती है — थकान जल्दी आती है, प्रतिरोधक क्षमता थोड़ी कम होती है।

गोचर शनि इस समय अष्टम भाव (आपकी जन्म-लग्न सिंह से गिनकर) में मीन राशि में वक्री हैं। अष्टम भाव आयु, बाधा और दीर्घकालिक रोगों का भाव है। **वक्री शनि की यहाँ दृष्टि बारहवें भाव पर भी है** (जहाँ आपके जन्म-कुंडली में बुध और शुक्र बैठे हैं) — यानी नींद, आराम और शरीर की पुनरावृत्ति-क्षमता पर दबाव रह सकता है।

इस दौर में —

- रीढ़, घुटने और जोड़ों का ध्यान रखें
- नींद का समय पक्का रखें — यही चंद्र का सबसे बड़ा उपाय भी है
- शरीर को थकाएँ ज़रूर, पर आराम उतना ही दें — **मंगल के अनुसार रोज़ व्यायाम, शनि के अनुसार नियम से।** मंगल आपके नवम भाव में स्वराशि मेष में हैं — शरीर में ऊर्जा है, उसे सही दिशा दें।
- पेट और पाचन पर भी नज़र रखें — बुध द्वादश में शत्रु राशि में हैं, जो पाचन-तंत्र को कभी-कभी प्रभावित करता है।

परिवार पर प्रभाव — घर के भीतर का माहौल

चतुर्थ भाव के स्वामी मंगल नवम भाव में स्वराशि में बैठे हैं — यह भाव-बल से मज़बूत भाव (भाव 4 का बल 11.63) है। घर का आधार टिका है। **पर चंद्र का चतुर्थ भाव में नीच होना बताता है कि घर में सुकून की तलाश रहती है — जो हमेशा पूरी नहीं होती।**

इस दशा में माता के स्वास्थ्य या घर के किसी बड़े निर्णय पर ध्यान देना पड़ सकता है। गोचर राहु आपकी चंद्र राशि से चौथे भाव में हैं — जो घर-परिवार में अचानक उथल-पुथल या अनिश्चितता का संकेत दे सकता है। **दिसम्बर 2026 में राहु कुम्भ से मकर में आएँगे — उसके बाद यह दबाव घटेगा।**

जीवनसाथी के साथ संवाद इस दौर में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सप्तमेश शनि छठे भाव में हैं — रिश्ते में कभी-कभी दूरी या खिंचाव आ सकता है। **खुलकर बात करना, एक-दूसरे को समय देना — यही इस दौर में रिश्ते को सँभालता है।**

कार्य पर प्रभाव — मेहनत और धैर्य का समय

दशमांश (D10) में लग्न कुम्भ है और सूर्य पहले भाव में हैं — करियर में आत्म-विश्वास और पहचान बनाने की क्षमता है। **पर इस समय गुरु D10 के बारहवें भाव (मकर) में हैं — करियर में नई शुरुआत या विस्तार में देरी हो सकती है।** गुरु अक्टूबर 2026 के अंत में कर्क से सिंह में आएँगे — **उसके बाद कार्य-क्षेत्र में स्थिति सुधरेगी।**

भद्रिका योगिनी (बुध) का यह समय लेखन, संचार, वार्ता और बुद्धि के काम में अनुकूल है। जो काम दिखता कम हो पर उसमें सोच-समझकर चलना पड़े — वह इस दौर में सबसे अच्छा फलता है। **शॉर्टकट इस समय उलटे पड़ेंगे; जो नींव डालेंगे, वह फ़रवरी 2027 के**

बाद फल देगी।

मुख्य बातें

- मन पर भार है — यह दौर का स्वभाव है, आपकी कमजोरी नहीं। ध्यान व मौन सबसे बड़ा उपाय।
- स्वास्थ्य में नींद, व्यायाम और नियम तीनों जरूरी — रीढ़ व जोड़ों का विशेष ध्यान रखें।
- परिवार में संवाद बनाए रखें; दिसम्बर 2026 के बाद घर का माहौल हल्का होगा।
- कार्य में धैर्य रखें; अक्टूबर 2026 से गुरु अनुकूल होंगे, फ़रवरी 2027 तक नई दिशा स्पष्ट होगी।
- इस पूरे दौर का सार एक ही है — भीतर से मज़बूत रहिए, बाहर धैर्य रखिए। जो अभी बो रहे हैं, वह अगले चरण में फलेगा।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

सुखेशे सुखभावस्थे लग्नेशे तद्रतेऽपि वा ।

शुभदृष्टे च जातस्य पूर्णं गृहसुखं वदेत् ॥

चतुर्थेश चौथे भाव में हो, या लग्नेश चौथे में हो, और शुभ दृष्टि हो — तो पूरा गृह-सुख कहना चाहिए।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १५



साढ़े साती का शुभ पक्ष — यह क्या सिखाने आई है

अ ध्या य 5

साढ़े साती का शुभ पक्ष — यह क्या सिखाने आई है

शनि दंड देने नहीं, परिपक्व करने आते हैं — और आपकी कुंडली में जो शनि हैं, वे स्वराशि मकर में, छठे भाव में बैठे हैं। यह शनि कमजोर नहीं, बलवान हैं। उनका जो भी पाठ था, वह सतही नहीं रहा होगा — गहरा रहा होगा, और टिकाऊ भी।

जो छिन गया, उसने असली क्रीमत बताई

साढ़े साती के दौर में (2017 से 2022 तक, जो आपके लिए धनु, मकर और कुम्भ — तीनों चरणों में आई) जो भी टूटा — रिश्ते, नौकरी, स्वास्थ्य, या आत्मविश्वास — उसने यह बताया कि आप असल में किस चीज़ से जुड़े हुए थे। शनि हमेशा नक़ली चीज़ें छिनते हैं, असली बचा देते हैं।

आपकी कुंडली में चंद्र वृश्चिक में, चौथे भाव में नीच के हैं — यानी मन पहले से ही गहरा और कभी-कभी अशांत रहता है। जब शनि इस चंद्र के पास से गुजरे, तो जो बेचैनी थी वह ऊपर आई। पर यही बाहर आना ज़रूरी था — जो भीतर दबा था, उसे देखे बिना उससे मुक्ति नहीं होती।

छठे भाव के शनि का असली संदेश

आपके जन्म-शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में हैं — और छठा भाव है श्रम, सेवा, शत्रु व स्वास्थ्य का। **यहाँ शनि का अर्थ है — जो काम दूसरे छोड़ दें, आप उसे भी पूरा करते हैं।** साढ़े साती ने इसी गुण को और मँजा होगा। जो लोग आपके साथ थे, वे परीक्षा के समय किनारे हो गए — पर आप टिके रहे। यही शनि की परीक्षा थी, और यही उनका वरदान भी।

इस हर्ष विपरीत राजयोग को ध्यान में रखिए — छठे भाव का स्वामी दुःस्थान में बैठा है, जिसका फल परंपरा में यह माना गया है कि **कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति होती है, और शत्रु परास्त होते हैं।** साढ़े साती जितनी गहरी गई, यह योग उतना ही पकता गया।

नवांश में शनि कर्क में — जो सीखना असली था

नवांश कुंडली (D9) में आपके शनि कर्क राशि में हैं — यह शनि का नीच का स्थान है। इसका अर्थ यह है कि रिश्तों में, भावनाओं में, घर-परिवार के मामलों में — शनि का पाठ सबसे कठिन था। साढ़े साती ने शायद परिवार, माता, या घर के किसी निर्णय के आसपास सबसे ज़्यादा दबाव डाला। **पर इसी दबाव में यह समझ आई कि कौन-से रिश्ते टिकाऊ हैं और किसे बनाए रखने में समझदारी है।**

अभी क्या बचा, और उसे कैसे इस्तेमाल करें

आज गोचर शनि मीन राशि में, आपके आठवें भाव में वक्री चल रहे हैं — साढ़े साती नहीं है। यह समय उस पाठ को जीवन में उतारने का है जो साढ़े साती ने दिया। 3 जून 2027 तक शनि मीन में रहेंगे — यह पूरा समय आत्म-मंथन, पुराने हिसाब साफ़ करने और जो असली है उसे मज़बूत करने का है।

- **रोज़ कोई एक काम अनुशासन से करें** — शनि इसी से प्रसन्न होते हैं।
- किसी ज़रूरतमंद की सेवा — बिना दिखावे के।
- जो बोझ मन पर अभी भी है, उसे किसी अपने से कहें — वृश्चिक चंद्र मन को दबाता है, बाहर आना ज़रूरी है।

मुख्य बातें

- साढ़े साती ने जो छीना, वह नक़ली था — जो बचा, वह आपका असली आधार है।

- जन्म-शनि स्वराशि मकर में हैं — शनि ने कठिन परीक्षा ली, पर आप उनके अपने शिष्य भी हैं।
- हर्ष विपरीत राजयोग के कारण **इस दौर के बाद की उन्नति अप्रत्याशित और ठोस होगी।**
- नवांश में शनि कर्क में — रिश्तों का पाठ सबसे कड़ा था, पर अब आप जानते हैं कि कौन असली है।
- अभी का समय (3 जून 2027 तक) उस सीख को जीवन में उतारने का है — संयम, सेवा और अनुशासन।



समय-रेखा — कब भारी, कब राहत

अ ध्या य 6

समय-रेखा — कब भारी, कब राहत

अभय शर्मा जी, साढ़े साती का सबसे कठिन दौर आपके पीछे रह चुका है। अब शनि मीन राशि में हैं और आपकी चंद्र राशि वृश्चिक से पाँचवें भाव में — न साढ़े साती, न ढैय्या। यह समय-रेखा आपको बताएगी कि आगे कब-कब सँभलकर चलना है और कब खुलकर आगे बढ़ना है।

अभी का दौर — सूर्य महादशा, शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2026 – फ़रवरी 2027)

यह अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक चलेगी — यानी अभी लगभग पाँच महीने और। **शनि आपके छठे भाव में स्वराशि मकर में हैं, वक्री भी।** छठे भाव का शनि शत्रु-विजय, ऋण-मुक्ति और कड़े परिश्रम का संकेत देता है — पर वक्री होने से उनका फल देर से और धीरे-धीरे उतरता है।

सूर्य महादशा के स्वामी ग्यारहवें भाव में हैं, जो लाभ का भाव है — इसलिए यह दौर पूरी तरह बंद नहीं है। पर **सूर्य मृत अवस्था में हैं**, इसलिए महादशा का फल सीधा और तुरंत नहीं मिलता। मेहनत लगती है, और उसका फल थोड़ा देर से आता है।

योगिनी दशा में इस समय भद्रिका-सिद्धा (शुक्र) चल रही है — शुक्र वाणी, लेन-देन और सौंदर्य-बोध को सक्रिय करते हैं। पर शुक्र आपकी कुंडली में बारहवें भाव में अस्त हैं, इसलिए योगिनी का संकेत भी मिश्रित रहेगा। **इन पाँच महीनों में बड़े आर्थिक निर्णय, क़र्ज़ और साझेदारियों में सतर्क रहें।**

फ़रवरी से दिसम्बर 2027 — सूर्य-बुध अंतर्दशा, राहत का पहला पड़ाव

फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा आरंभ होगी — यह दिसम्बर 2027 तक चलेगी। **बुध आपके ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं**, यानी लाभ-भाव के। वे बारहवें में हैं और शत्रु-राशि में, इसलिए बल पूरा नहीं — पर दशा-अंतर्दशा का मेल लाभ की ओर इशारा करता है।

इस काल में बौद्धिक काम, लेखन, संवाद और व्यापार में गति आ सकती है। **34-35 वर्ष की आयु में यह करियर के लिए एक सक्रिय खिड़की है।** जून 2027 तक शनि मीन में ही रहेंगे, इसलिए थोड़ी धीमी गति बनी रहेगी — पर मार्च 2027 के बाद से हल्कापन महसूस होने लगेगा।

दिसम्बर 2027 – अप्रैल 2029 — सूर्य-केतु व सूर्य-शुक्र, मिश्रित समय

दिसम्बर 2027 से केतु की अंतर्दशा आएगी — केतु ग्यारहवें भाव में हैं। केतु की दशा में मन भीतर की ओर मुड़ता है, बाहरी दुनिया से थकान आ सकती है। **यह समय नया काम शुरू करने से अधिक, चल रहे काम को पक्का करने का है।**

अप्रैल 2028 से शुक्र की अंतर्दशा — शुक्र बारहवें भाव में अस्त हैं, इसलिए यह काल भी उतना सीधा नहीं होगा। सम्बंधों और व्यय पर ध्यान देना होगा।

अप्रैल 2029 — चंद्र महादशा, बड़ा मोड़

अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा आरंभ होगी — यह 2039 तक चलेगी। उस समय आपकी आयु लगभग 37 वर्ष होगी। चंद्र आपके चतुर्थ भाव में हैं — सुख, घर, माता और मन का भाव। चंद्र नीच राशि में हैं, इसलिए यह दशा गहरी भावनात्मक हलचल भी ला सकती है।

पर साथ में गजकेसरी योग की शक्ति है — गुरु लग्न में हैं और चंद्र से दसवें भाव में, जो यश और कार्य-सफलता का भाव है। **चंद्र महादशा में यश, परिवार और मन — तीनों एक साथ परिपक्व होंगे।**

मुख्य बातें

- **अभी (सितंबर 2026 – फ़रवरी 2027):** शनि अंतर्दशा — सँभलकर, सतर्कता से; बड़े निर्णय टालें।
- **फ़रवरी 2027 से:** बुध अंतर्दशा — बौद्धिक काम, संवाद और लाभ की ओर धीरे-धीरे गति।
- **मार्च 2027 के बाद:** हल्कापन बढ़ेगा, शनि की चाल भी अनुकूल होने लगेगी।
- **दिसम्बर 2027 – अप्रैल 2029:** मिश्रित समय — भीतर मज़बूती बनाएँ, बाहरी विस्तार धीरे।
- **अप्रैल 2029:** चंद्र महादशा — जीवन का एक नया और महत्वपूर्ण अध्याय; यश व घर-परिवार दोनों पर ध्यान केंद्रित होगा।



साढ़े साती हेतु शनि-शांति उपाय

अ ध्या य 7

साढ़े साती हेतु शनि-शांति उपाय

अभय शर्मा जी, इस समय आप साढ़े साती से बाहर हैं — इसलिए यहाँ भारी कर्मकांड की नहीं, **टिकाऊ आदत की ज़रूरत है**। शनि आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में स्थित हैं — यह अत्यंत बलवान स्थिति है, और शनि का यह रूप मेहनत व अनुशासन को इनाम देता है, भय को नहीं।

अपनी दिनचर्या से शनि को साधें — यही सबसे बड़ा उपाय है

शनि का असली उपाय पूजा नहीं, **समय की पाबंदी** है। आपकी कुंडली में शनि षष्ठेश हैं — सेवा, परिश्रम और नियम उनका क्षेत्र है। जो व्यक्ति रोज़ एक काम बिना नागा करता है — चाहे वह सुबह की सैर हो, किसी ज़रूरतमंद की छोटी मदद हो, या काम का कोई एक लंबित काम — वह शनि को सबसे अधिक प्रसन्न करता है।

कल से शुरू कर सकते हैं:

- सुबह एक तय समय पर उठना — और सोने का समय भी पक्का रखना।
- कोई एक छोटा काम चुनें जो आप रोज़ करेंगे — उसे 40 दिन तक बिना नागा करें।
- शॉर्टकट और जल्दबाज़ी से बचें — इस काल में धीमा पर पक्का रास्ता ही टिकता है।

मंत्र — कारण सहित, विधि सहित

आपकी कुंडली में **सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा** (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027) चल रही है। सूर्य और शनि परस्पर तनाव में रहते हैं — इस काल में यह तनाव भीतर से भी और बाहर से भी महसूस हो सकता है। इसलिए शनि-मंत्र का जाप इस अंतर्दशा में विशेष रूप से उपयुक्त है।

शनि बीज मंत्र: ॐ शं शनैश्चराय नमः

- **दिन:** शनिवार
- **समय:** सूर्यास्त के बाद, संध्या काल
- **संख्या:** 108 बार (एक माला)
- **कब से:** अगले शनिवार से आरंभ करें, फ़रवरी 2027 तक नियमित रखें

यदि रोज़ नहीं कर सकते, तो केवल शनिवार को भी पर्याप्त है — पर उस एक दिन बिना चूके।

दान व सेवा — आपकी कुंडली के अनुसार

षष्ठ भाव में स्थित शनि सेवा और परिश्रम के कारक हैं। **सेवा ही इनका सबसे सीधा उपाय है।**

- **किसकी सेवा:** बुजुर्ग, मजदूर वर्ग, या ऐसे लोग जो समाज में उपेक्षित हों।
- **कैसे:** महीने में एक बार किसी वृद्धाश्रम में जाना, या किसी दिहाड़ी मजदूर को बिना माँगे कुछ दे देना — यह दिखावे का नहीं, चुपचाप का काम है।
- **शनिवार को दान:** सरसों का तेल, काले तिल, या काला वस्त्र — किसी जरूरतमंद को।

गोचर शनि इस समय **मीन राशि में वक्री** हैं और आपकी कुंडली के अष्टम भाव को देख रहे हैं — यह अंतर्मन की परीक्षा का समय है। इसलिए बाहरी दान से अधिक **भीतरी सरलता** — अहंकार, जिद और शिकायत छोड़ना — इस काल का असली उपाय है।

रत्न — माणिक पहले, नीलम कभी नहीं

इस समय **माणिक** (सूर्य का रत्न) आपके लिए उपयुक्त है — यह आपका जीवन-रत्न भी है और सूर्य महादशा में और भी प्रासंगिक। इसे **रविवार को, सोने या ताँबे में, अनामिका अँगुली में धारण करें।**

नीलम (शनि का रत्न) इस कुंडली के लिए मना है — शनि यहाँ षष्ठेश हैं, उन्हें रत्न से बल देना उलटा असर कर सकता है। यदि कहीं नीलम पहनने की सलाह मिले, तो विनम्रता से मना कर दीजिए।

माणिक [chcete](http://chcete.com) हमारे **कौस्तुभ जेम्स (koustubhgems.com)** से ले सकते हैं — 1997 से धर्मशाला में, हर रत्न प्रयोगशाला-प्रमाणित और सील-बंद पैकिंग में।

मुख्य बातें

- **दिनचर्या में अनुशासन** — यही शनि का सबसे बड़ा उपाय; मंत्र-दान उसके बाद।
- **शनि बीज मंत्र** — शनिवार संध्याकाल, 108 बार, फ़रवरी 2027 तक।
- **सेवा** — बुजुर्ग या मजदूर वर्ग की, चुपचाप, बिना दिखावे के।
- **माणिक धारण करें, नीलम कभी नहीं** — यह कुंडली की अपनी माँग है।
- **भीतरी सरलता** — शिकायत और जिद छोड़ना — इस काल का सबसे गहरा उपाय है।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ शनि साढ़े साती रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।